भूमिका

"कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" के काव्य में प्रगतिशील चेतना" मेरा लघु शोध-प्रबंध आपके सामने प्रस्तुत करते हुये मुझे अत्यंत आनंद हो रहा है । मैंने अपने विद्यार्थी जीवन में जब शिवमंगल सिंह "सुमन" की कविताओं के अध्ययन का अवसर पाया तब मैंने अनुभव किया कि कवि "सुमन" जी की कविताओं में अभिव्यक्त प्रगतिशील चेतना को शोध का विषय क्यों न किया जाय । बी.ए., एम्.ए., तथा एम्.फिल की पाठ्य-पुस्तकों में सौभाग्य से सुमन की कविताओं का अध्ययन हुआ था । इसीकारण उनकी कविता मेरे चिंतन का विषय बन गया । तभी से मेरा विचार शिवमंगल सिंह "सुमन" के काव्य में अभिव्यक्त प्रगतिशील विचार पर गवेषणा करने का हुआ ।

डॉ. भगवतशरण उपाध्याय जी द्वारा संपादित "कविश्री शिवमंगल सिंह "सुमन" नामक किताब की, "चल रही उसकी कुदाली", "बे-घरबार", "जल रहे हैं दीप, जलती है जवानी" जैसी प्रगतिशील कविताएँ मेरे मन को आकर्षित करती रही और "सुमन" की लेखनी का प्रभाव भी मेरे व्यक्तित्वपर रहा ।

मै इस बात का सौभाग्य समझता हूँ कि मुझे "सुमन" जी के प्रगतिशील चेतना पर गवेषणा करने का अवसर मिला क्यों कि जहाँ तक मुझे ज्ञात है "सुमन" जी के काव्य में अभिव्यक्त प्रगतिशील चेतनापर आजतक शोधकार्य नहीं हुआ है । इसीलिए मुझे इस बात का हर्ष हो रहा है कि मैंने "सुमन" जी के काव्य में व्यक्त प्रगतिशील चेतनापर लघु शोध-प्रबंध के द्वारा शोधकार्य किया है । एक तरह से खेद का विषय भी रहा है कि "सुमन" जैसे महान् प्रगतिशील कवि आजतक अन् देखे ही रह गये । कई किताबों में उनके काव्यपर जरूर कुछ लिखा गया है मगर डॉ. प्रभाकर क्षेत्रिय द्वारा लिखित "सुमन मनुष्य और स्रष्टा" को छोडकर उनके काव्यपर स्वतंत्र रूप में कोई काम नहीं हुआ है । डॉ. क्षत्रिय की

पुस्तक में भी उनकी प्रगतिशीलता अछुती ही रही है । अत: "सुमन" जी के काव्य में प्रगतिशील चेतना यह मेरा प्रथम प्रयास रहा हैं ।

आज जब संसार का हर कोना प्रगतिशीलता के आयाम छूँ रहा है तो "सुमन" जी के काव्य में अभिव्यक्त विचारों को देखना आज आवश्यक लग रहा है । हिन्दी साहित्य के नवीनतम प्रवाह में "सुमन" जी का योगदान ढूँढना आज अनिवार्य बन गया है । इस कार्य में मेरा यह लघु शोध-प्रबंध एक विनम्र प्रयास मात्र रहा हैं ।

मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को सात अध्यायों में विभाजित किया है । मेरे लघु शोध-प्रबंध का प्रथम अध्याय "कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" - एक परिचय" है । इसमें "सुमन" जी का जन्म, जन्मस्थान, माता-पिता, परिवार, शिक्षा, प्रेरणा प्रभाव, व्यक्तित्व, विदेश यात्रायें आदि बातों का परिचय दिया हैं ।

दूसरा अध्याय "कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" के काव्य की युगीन परिस्थितियाँ" हैं । इस अध्याय में "सुमन" जी के काव्य काल की युगीन राजकीय, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों का ब्योरा दिया हैं जो "सुमन" की काव्य यात्रा में प्रभाव के रूप में रहा है ।

तीसरा अध्याय "प्रगतिशील चेतना का सैद्धांतिक विवेचन" है । इसमें प्रगतिशील और प्रगतिवाद दो शब्दों का साम्य एवं विरोध की कुछ सैद्धांतिक बातें कही गयी हैं । प्रगतिशील काव्य की विशेषताओं का परिचय भी कराया गया हैं जो आगे "सुमन" जी के काव्य में अभिव्यक्त प्रगतिशील विचारों के विवरण में सहायक सिद्ध हुई हैं ।

चौथा अध्याय "सुमन" की काव्य-यात्रा में प्रगतिशील कविताएँ" है। इसमें "सुमन" जी के सात प्रमुख काव्यसंग्रहों में निहित प्रगतिशील कविताओं का परिचय और काव्यसंग्रह में व्यक्त विचारों का नामनिर्देश किया है।

पाँचवा अध्याय है "शिवमंगल सिंह"सुमन" के काव्य में अभिव्यक्त प्रगतिशील विचार" जो मेरे लघु शोध-प्रबंध का प्रमुख विषय रहा है। इसमें "सुमन" जी के काव्य में अभिव्यक्त प्रगतिशील विचारों को चित्रित किया है। "समाज का यथार्थ चित्रण", "सामाजिक समस्याओं का चित्रण", "धर्म,ईश्वरवाद और रूढ़ियों का विरोध"."नारी के प्रति प्रगतिशील दृष्टिकोण", "प्रेम का सामाजिक रूप", "पौरुषशील दृष्टि एवं आशावादी दृष्टिकोण", "श्रमिक और पददलितों के प्रति सहानुभूति", "पूँजीवाद तथा साम्राज्यवाद का विरोध", "परिवर्तन की पुकार", "सामाजिक क्रांति एवं संघर्ष का तीव्र स्वर", "लाल क्रांति का जयगान","राष्ट्रवाद", "मानवतावाद की महत्ता" आदि मुद्दोंको लेकर "सुमन"जी के काव्य में अभिव्यक्त प्रगतिशील विचारों का विवेचन उनके काव्यकृतियों की कविताओं के आधारपर किया गया है। "सुमन" जी के विचारों को अभिव्यक्ति देने का यह एक छोटासा प्रयत्न रहा है।

छठा अध्याय "सुमन"की कविता के कलापक्ष पर है जिसका नामकरण "कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" की प्रगतिशील कविता का शिल्प" है। "सुमन" के काव्य में भाषा, शैली, प्रतीक, व्यंग्य, छंद आदि बातों का संक्षिप्त विवेचन किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का सातवा अध्याय "समापन" है जिसमें "सुमन" की काव्य यात्रा में अभिव्यक्त प्रगतिशील विचारों का निचोड है। हिन्दी के प्रगतिशील काव्य में "सुमन"जी का योगदान निश्चित करने का प्रयत्न किया गया है।

इसके साथ साथ विवेच्य पुस्तके और संदर्भ ग्रंथों की सूची दी गयी है। लेखक तथा उनकी पुस्तकों का पूरा ब्योरा संदर्भ सूची में दिया है। जिसमें शिवमंगल सिंह "सुमन" जी का निजी पत्र भी प्रस्तुत शोध प्रबंध लेखक के नाम आशीष के रूप में शामिल हैं।

कृतज्ञता - ज्ञापन

"कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" के काव्य में प्रगतिशील चेतना" इस लघु शोध-प्रबंध के कार्य पूर्ति में मेरे हितचिंतकोंका मैं कृपा पात्र रहा हूँ । मेरे लिए सौभाग्य का विषय है कि मुझे श्रद्धेय एवं विवेच्य कवि डॉ. शिवमंगल सिंह "सुमन" ने तत्परता से पत्र लिखकर मार्गदर्शन किया । उनका अपना किमती कृपापत्र भेजकर मुझे उपकृत किया हैं मैं उनका आजीवन ऋणी रहूँगा । उनका पत्र मेरे लिए आशिष के रूप में है, वह परिशिष्ट में दे रहा हूँ । मै उन समस्त लेखकों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ, जिनकी रचनाओं का उपयोग मैंने सहायक ग्रंथों के रूप में किया है ।

मुझे इस बातपर गर्व है कि मेरे मार्गदर्शक तथा निर्देशक प्रा. डॉ. प्रभाकर पां. पाठक जी हर दम मेरी मुसीबतों में मेरे साथ रहें । मेरा यह लघु शोध-प्रबंध उन्हींका कृपाशिष मात्र है । मेरे कार्य में उनका अपना भी योगदान रहा है । उनकी सहृदयता हरदम मुझे प्रोत्साहित करती रही । उनके सहयोग में मैंने उनकी गहरी चिंतन शीलता का अनुभव तो किया ही मगर कई बार उनके स्नेहभाव का पात्र भी रहा हूँ । अत: मैं श्रद्धेय पाठक जी का आजीवन ऋणी हूँ ।

दयानंद महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. कुंदुरवाड के भी मुझपर ऋण है । दयानंद महाविद्यालय के ग्रंथालय प्रमुख और अन्य सेवक गण हरदम मुझे सहयोग देते रहें इसलिए मैं उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ ।

माढा महाविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. के. एम्. शहा तथा बलवंत महाविद्यालय, विटा के प्रो. के. पी. माली जी का मैं हर दम कृपा पात्र रहा हूँ । संदर्भ ग्रंथों की उपलब्धता में उन्होंने बड़ी सहायता की है।

मेरेहितचिंतक और सहयोगी मित्रों का मेरे कार्य में हर दम सहकार्य रहा। उनका नामनिर्देश किये बिना इसमें पूर्णता नहीं आ सकती । उन सभी ज्ञात अज्ञात मित्रों का भी मैं ऋणी रहूँगा ।

विनीत,

सोलापुर .

दिनांक :२५/५/१९९०

[श्री मारुती द. शिंदे]